

MASTER IN HISTORY (MAH)

Term-End Examination December, 2024

MHI-04: POLITICAL STRUCTURES IN INDIA

With PDF (PART-2)

LEARN IN EASY LANGUAGE WITH ME

For both medium students.

Describe the central administration of the Delhi Sultans.

The **central administration** of the Delhi Sultans refers to the system of governance established by the Sultans of Delhi to manage and rule over the vast territories they controlled. The central administration evolved over time, with different Sultans introducing various reforms.

1. **Role of the Sultan** The Sultan was the supreme ruler and the central authority in the administration. He was responsible for maintaining law and order, defending the empire, and ensuring justice. The Sultan's position was considered both political and religious, and he was seen as the protector of Islam and the state.

सुलतान की भूमिका

सुलतान सर्वोच्च शासक और प्रशासन में केंद्रीय शक्ति थे। उन्हें साम्राज्य की रक्षा, कानून और व्यवस्था बनाए रखना और न्याय सुनिश्चित करना था। सुलतान की स्थिति राजनीतिक और धार्मिक दोनों रूप से महत्वपूर्ण मानी जाती थी, और उन्हें इस्लाम और राज्य के रक्षक के रूप में देखा जाता था।

2. **The Central Administrative System** The Sultan's court was the heart of the administration, where decisions were made regarding governance, military, and justice. The Sultan was assisted by several important officials to manage different aspects of the empire.

केंद्रीय प्रशासनिक प्रणाली

सुलतान का दरबार प्रशासन का केंद्र था, जहां शासन, सेना और न्याय से संबंधित निर्णय लिए जाते थे। सुलतान को साम्राज्य के विभिन्न पहलुओं को प्रबंधित करने के लिए कई महत्वपूर्ण अधिकारियों द्वारा सहायता प्राप्त होती थी।

3. Important Officials in the Administration

- **Wazir (Prime Minister):** The Wazir was the chief administrator who assisted the Sultan in running the government. He was in charge of the administration, finances, and the civil service.
- **Diwan-i-Ariz (Military Head):** The Diwan-i-Ariz was responsible for the army and military matters, including the recruitment and maintenance of soldiers.
- **Diwan-i-Riyasat (Revenue Minister):** This official was responsible for managing the empire's revenue, including land taxes and other forms of income.
- **Qazi (Judge):** The Qazi played a key role in the legal system, ensuring that Islamic law (Sharia) was followed and overseeing the judicial processes.
- **Amir-i-Hajib (Master of the Royal Household):** This official managed the Sultan's household and personal affairs.

प्रशासन में महत्वपूर्ण अधिकारी

- **वज़ीर (प्रधानमंत्री):** वज़ीर प्रमुख प्रशासक था जो सुलतान की सहायता से सरकार चलाता था। वह प्रशासन, वित्त और सिविल सेवा का प्रभारी होता था।
- **दीवान-ए-आरीज़ (सैन्य प्रमुख):** दीवान-ए-आरीज़ सेना और सैन्य मामलों के लिए जिम्मेदार था, जिसमें सैनिकों की भर्ती और देखभाल शामिल थी।
- **दीवान-ए-रियासत (राजस्व मंत्री):** यह अधिकारी साम्राज्य के राजस्व का प्रबंधन करता था, जिसमें भूमि कर और अन्य आय के स्रोत शामिल थे।
- **काज़ी (न्यायधीश):** काज़ी कानूनी प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था, यह सुनिश्चित करते हुए कि इस्लामिक कानून (शरिया) का पालन किया जाए और न्यायिक प्रक्रिया की देखरेख करता था।
- **अमीर-ए-हाजिब (राजकीय परिवार का प्रमुख):** यह अधिकारी सुलतान के घर और निजी मामलों का प्रबंधन करता था।

4. **Provincial Administration** Below the central administration, the empire was divided into provinces, each governed by a **Governor** (called **Naib** or **Mamluk**). These governors were responsible for maintaining law and order, collecting taxes, and ensuring that the Sultan's orders were followed in their regions.

प्रांतीय प्रशासन

केंद्रीय प्रशासन के नीचे साम्राज्य को प्रांतों में बाँट दिया गया था, जिनमें से प्रत्येक का शासक **गवर्नर** (जिसे **नायब** या **ममलुक** कहा जाता था) होता था। ये गवर्नर कानून और व्यवस्था बनाए रखने, कर संग्रहण, और यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होते थे कि सुलतान के आदेश उनके क्षेत्रों में पालन किए जाएं।

5. **Revenue and Taxation System** The Delhi Sultans developed an organized system of revenue collection. The most important tax was the **land tax**, known as **Kharaj**, which was levied on the agricultural produce. Officials like the **Diwan-i-Riyasat** were responsible for collecting these taxes and ensuring a steady income for the Sultan's treasury.

राजस्व और कर प्रणाली

दिल्ली के सुलतान ने राजस्व संग्रहण का एक संगठित प्रणाली विकसित की। सबसे महत्वपूर्ण कर **भूमि कर** था, जिसे **खराज** कहा जाता था, जो कृषि उत्पादों पर लगाया जाता था। अधिकारियों जैसे **दीवान-ए-रियासत** इन करों को एकत्रित करने और सुलतान के खजाने के लिए नियमित आय सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार होते थे।

6. **The Role of the Military** The military was an essential part of the central administration. The Sultan depended on a strong army for the defense of the empire and to suppress internal revolts. The military was organized into units, each commanded by a **Shikdar** or **Amir** (military commanders).

सैन्य की भूमिका

सैन्य केंद्रीय प्रशासन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। सुलतान साम्राज्य की रक्षा और आंतरिक विद्रोहों को दबाने के लिए एक मजबूत सेना पर निर्भर थे। सेना को इकाइयों में विभाजित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक का नेतृत्व एक **शिकदर** या **अमीर** (सैन्य कमांडर) करते थे।

7. **Court and Administration of Justice** The Sultan's court was where justice was administered, and the Qazi played an important role in ensuring that Islamic laws were followed. The Qazi heard cases related to family matters, inheritance, and criminal offenses, while the Sultan could hear appeals and make final decisions on important issues.

दरबार और न्यायिक प्रशासन

सुलतान का दरबार वह स्थान था जहां न्याय का पालन किया जाता था, और काज़ी इस बात को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे कि इस्लामिक कानूनों का पालन किया जाए। काज़ी पारिवारिक मामलों, विरासत और आपराधिक अपराधों से संबंधित मामलों की सुनवाई करते थे, जबकि सुलतान अपीलों को सुन सकते थे और महत्वपूर्ण मुद्दों पर अंतिम निर्णय ले सकते थे।

Zamindars rebellions in Awadh.

The **Zamindar Rebellions in Awadh** were a series of uprisings led by local landowners, or zamindars, in the Awadh region (modern-day Uttar Pradesh) during the 18th and 19th centuries.

These rebellions were mainly a response to the oppressive policies and exploitation by the British East India Company, and later by the British government, following the decline of Mughal power.

1. **Background of Zamindars in Awadh** Zamindars were influential landowners in rural areas, responsible for collecting revenue from peasants and paying taxes to the ruling authorities. In Awadh, zamindars held significant power and had control over large areas of land. However, their position began to weaken with the increasing interference of the British East India Company and the changing revenue policies that affected their traditional rights.

आवध में ज़मींदारों का पृष्ठभूमि

ज़मींदार ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभावशाली भूमि मालिक होते थे, जो किसानों से कर वसूलने और

शासक प्राधिकरण को कर अदा करने के लिए जिम्मेदार होते थे। अवध में ज़मींदारों का महत्वपूर्ण प्रभाव था और उनके पास बड़े पैमाने पर भूमि का नियंत्रण था। हालांकि, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी और उनके द्वारा लागू किए गए नए राजस्व नीति के कारण उनके पारंपरिक अधिकारों में हस्तक्षेप बढ़ने के कारण उनकी स्थिति कमजोर होने लगी।

2. Causes of the Zamindar Rebellions

- **Exploitation by the British East India Company:** The British East India Company imposed heavy taxes on zamindars and peasants, which led to widespread resentment. The zamindars were unable to collect sufficient revenue to pay their dues, leading to financial hardships.
- **Changes in Revenue Policies:** The British introduced new revenue systems such as the **Permanent Settlement (1793)**, which fixed land taxes. This system often favored the British and left zamindars vulnerable to financial instability.
- **Loss of Power:** As the British took control over the region, zamindars lost their traditional powers and their authority was undermined.

ज़मींदार विद्रोहों के कारण

- **ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा शोषण:** ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने ज़मींदारों और किसानों पर भारी कर लगाया, जिससे व्यापक नाराजगी फैल गई। ज़मींदार अपने कर्तव्यों का भुगतान करने के लिए पर्याप्त राजस्व वसूलने में असमर्थ थे, जिससे उन्हें वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
- **राजस्व नीति में बदलाव:** ब्रिटिशों ने **स्थायी बंदोबस्त (1793)** जैसी नई राजस्व प्रणालियाँ लागू कीं, जिन्होंने भूमि कर को स्थिर कर दिया। यह प्रणाली अक्सर ब्रिटिशों के पक्ष में थी और ज़मींदारों को वित्तीय अस्थिरता का सामना करना पड़ा।
- **शक्ति की हानि:** जैसे-जैसे ब्रिटिशों ने क्षेत्र पर नियंत्रण किया, ज़मींदारों की पारंपरिक शक्तियाँ खो गईं और उनकी सत्ता कमजोर हो गई।

3. Notable Zamindar Rebellions in Awadh

- **The Revolt of 1857:** Although not solely a zamindar uprising, the **Revolt of 1857** (also known as the First War of Indian Independence) saw significant participation from zamindars in

Awadh. They rebelled against British rule due to the economic hardships caused by oppressive policies. Leaders like **Begum Hazrat Mahal** and **Maulvi Ahmadullah Shah** played key roles in leading these uprisings, and zamindars were a major part of the resistance against British forces.

- **Rebellion of 1857 in Awadh:** Before the broader revolt, there were several smaller uprisings by zamindars in Awadh, where they protested against the harsh land revenue system and British interference. These early uprisings laid the foundation for the larger rebellion of 1857.

आवध में प्रमुख ज़मींदार विद्रोह

- **1857 का विद्रोह:** हालांकि यह केवल एक ज़मींदार विद्रोह नहीं था, फिर भी **1857 का विद्रोह** (जिसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला युद्ध भी कहा जाता है) में अवध के ज़मींदारों ने महत्वपूर्ण भागीदारी की। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह किया क्योंकि शोषक नीतियों के कारण उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। **बेगम हज़रत महल** और **मौलवी अहमदुल्लाह शाह** जैसे नेताओं ने इन विद्रोहों का नेतृत्व किया, और ज़मींदार ब्रिटिश सेनाओं के खिलाफ प्रतिरोध का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे।
- **1857 का विद्रोह अवध में:** व्यापक विद्रोह से पहले, अवध में ज़मींदारों द्वारा कई छोटे विद्रोह हुए थे, जहां उन्होंने कठोर भूमि कर प्रणाली और ब्रिटिश हस्तक्षेप के खिलाफ विरोध किया। ये शुरुआती विद्रोह 1857 के बड़े विद्रोह की नींव बने।

4. Consequences of the Zamindar Rebellions

- **British Retaliation:** The British responded to these uprisings with brutal force, executing many zamindars and their families. The British made efforts to weaken the power of zamindars by confiscating their lands and wealth.
- **Changes in Administration:** After the **Revolt of 1857**, the British government took direct control of Awadh, removing the Mughal-appointed Nawabs and establishing British rule. The zamindars lost much of their influence and power in the region, and many were either removed or weakened by the British administration.

ज़मींदार विद्रोहों के परिणाम

- **ब्रिटिश प्रतिशोध:** ब्रिटिशों ने इन विद्रोहों का कठोर जवाब दिया, और कई ज़मींदारों और उनके परिवारों को सजा दी। ब्रिटिशों ने ज़मींदारों की भूमि और संपत्ति को जब्त करके उनकी शक्ति को कमजोर करने का प्रयास किया।
- **प्रशासन में बदलाव: 1857 के विद्रोह** के बाद, ब्रिटिश सरकार ने अवध पर सीधा नियंत्रण ले लिया, मुग़ल द्वारा नियुक्त नवाबों को हटा दिया और ब्रिटिश शासन की स्थापना की। ज़मींदारों की क्षेत्र में प्रभाव और शक्ति काफी हद तक कम हो गई, और कई को ब्रिटिश प्रशासन द्वारा हटा दिया गया या कमजोर कर दिया गया।

LINK OF PART 1 IS IN DESCRIPTION

JOIN MY WHATSAPP CHANNEL FOR UPDATES

PDF IS ON MY WEBSITE hindustanknowledge.com

ScholarlyWinds